ढोके-टाड़ई

कोरकू

कविता: घनश्याम तिवारी

चित्र: धनंजय

एकलव्य

ORACLE

ढोके टाड़ई

एक लम्बी कविता

कविता: घनश्याम तिवारी
चित्र: धनंजय

एकलव्य

ORACLE

ढोके टाड़ई

एक लम्बी कविता

नाना-नानी (कोरकू)

Nana-Nani (KORKU)

कविता: घनश्याम तिवारी

चित्र: धनंजय

हिन्दी से कोरकू अनुवाद: रायसिंग बारस्कर, जानकी अखण्डे, प्रेमबती शैलू (शाहपुर)

संयोजन: खेमप्रकाश यादव, राजेन्द्र देशमुख. आकाश मालवीय, हेमराज मालवीय, निदेश सोनी, अशोक हनोते, सुनील हनोते, रामकुमार सरोज ।

सम्पादकीय व उत्पादन सहयोग: इन्दु श्रीकुमार व कमलेश यादव

यह किताब हिन्दी व कोरकू भाषा में भी उपलब्ध है

संस्करण: जनवरी 2025 (1000 प्रतियाँ)

कागज़: 70 gsm नेचुरल शेड मैपलि व 220 gsm एफबीबी (कवर)

ISBN: 978-81-19771-87-5

मूल्य: ₹ 20.00

ORACLE ओरेकल के वित्तीय सहयोग से विकसित

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**

जमनालाल बजाज परिसर

जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)

फोन: +91 755 297 7770-71-72-73

वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 268 7589

ढोके टाड़ई ते हनवन,
अगर तोरे ते का पवाव यु घोड़गा
अमा ते हरू यू ओ ऊँचा थोड़ा सा |

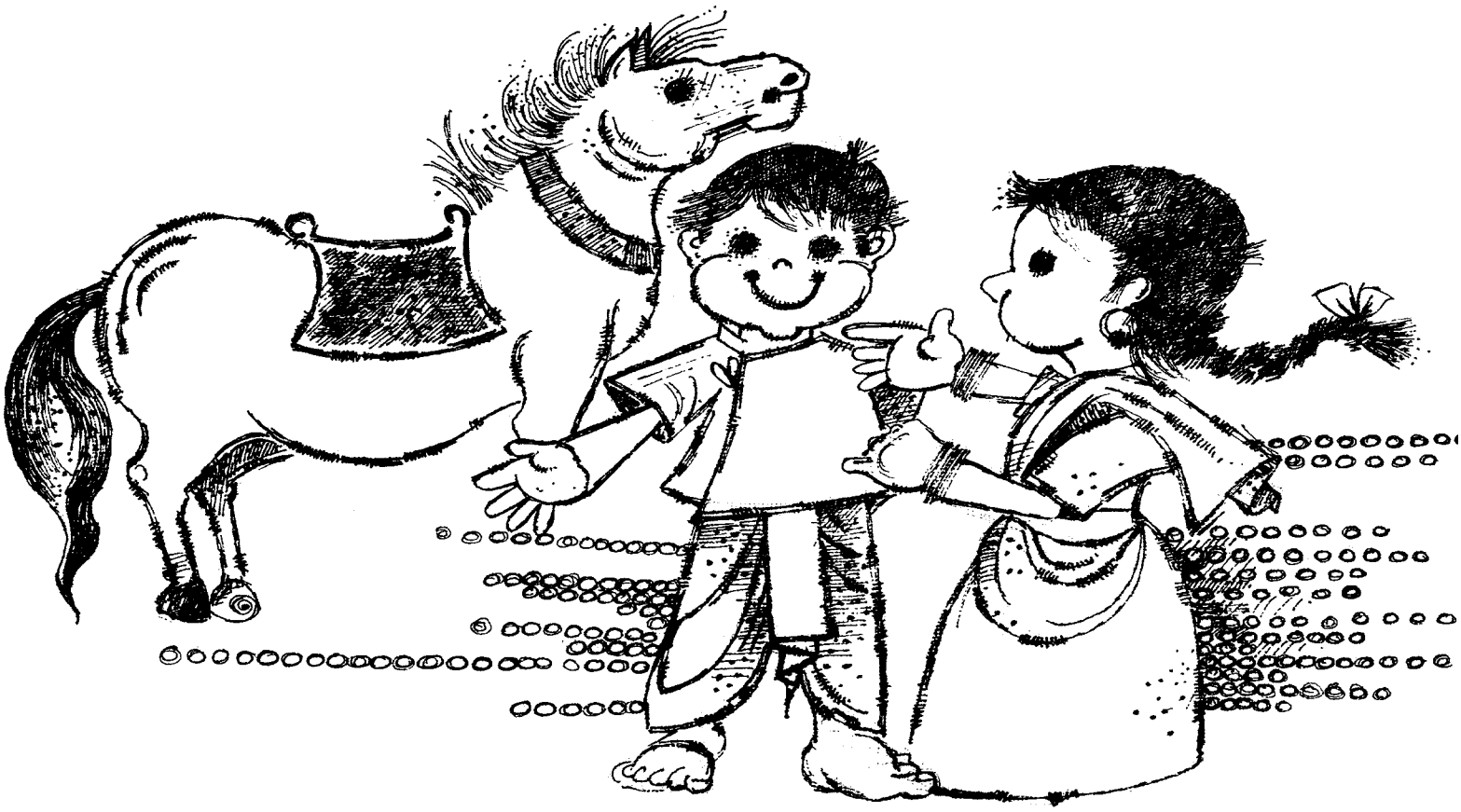

टाइ़ई हनवन,
अगर तोरेन का हाथी पवाव यु
अमा ते इंग ऊँचा हरू यु ओ |

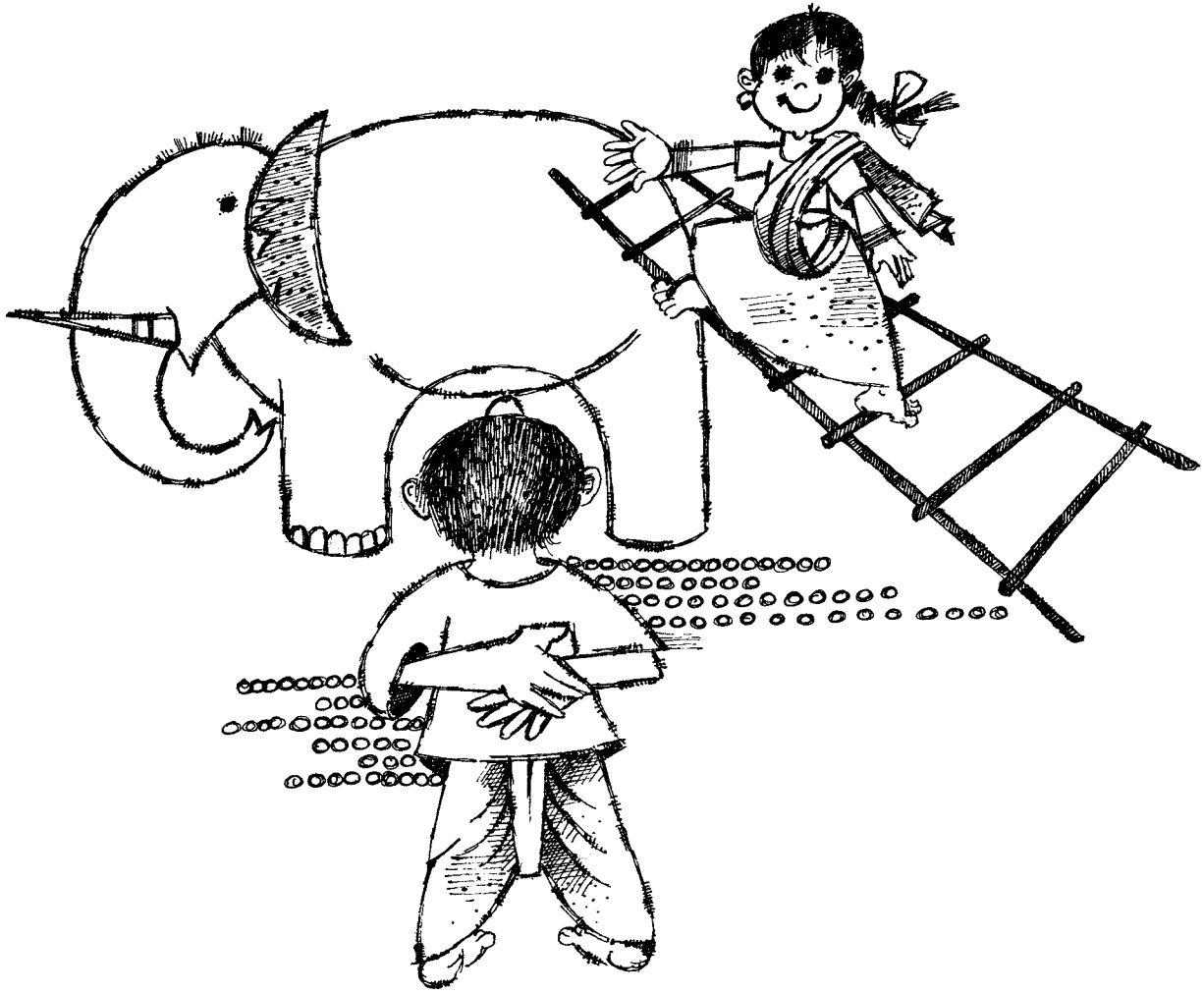

ढोकेंन गुस्सा हायन,
डुय दिजागा थोड़ा गरमावयन,
यदि ईंग ऊँटों लियन पंडय यू
ईंग सबकु ते ऊँचा हरू यू ओ |

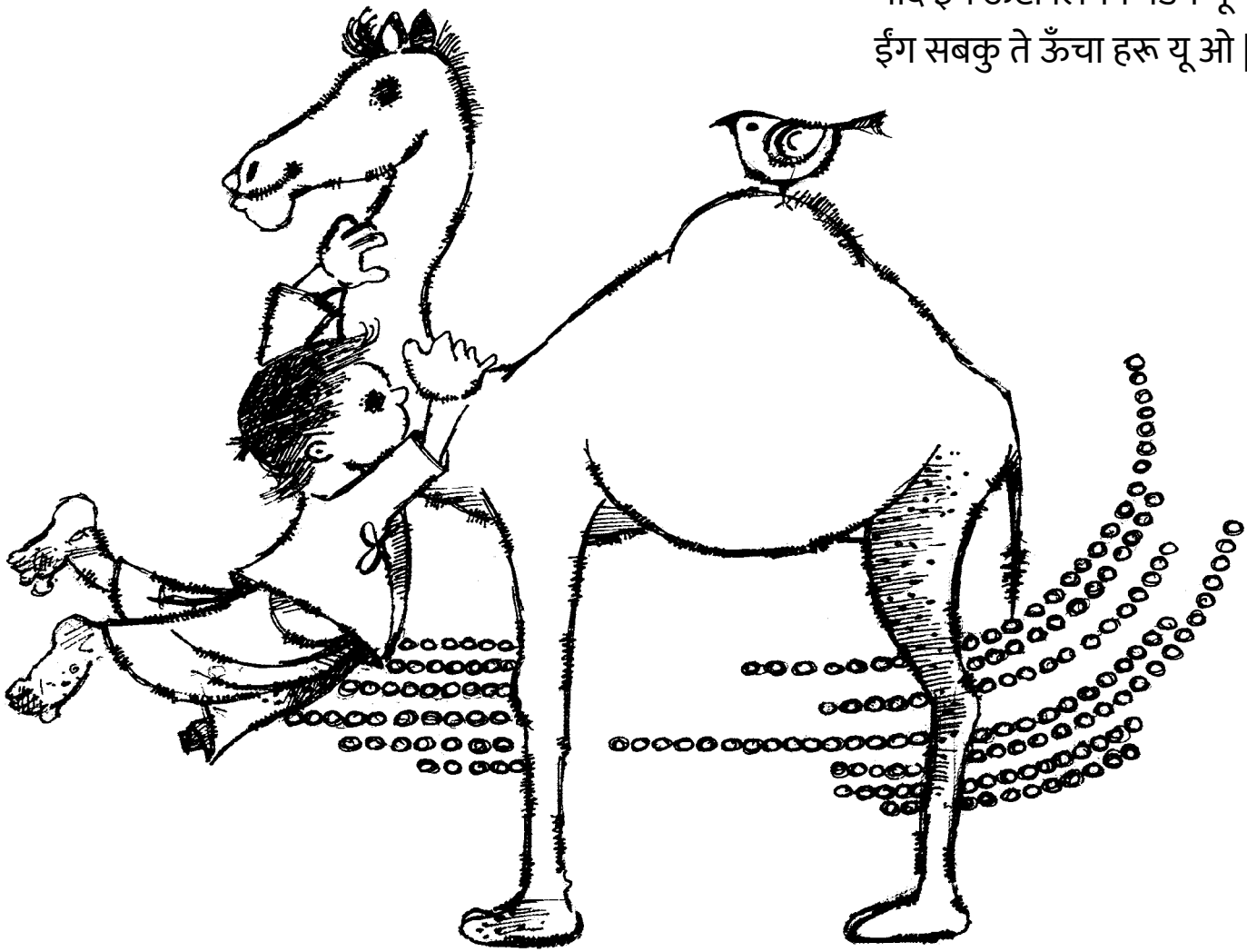

टाड़ई मिन्ते तोन रोकाव कन,
ढोके गा सुतून झुकाव दू,
टाड़ई ऊरा लियन पंडय ते हनवन
सबकु ते ऊँचा इंया डोली |

ढोके सड्डब शुरू के
लीड़े-लीड़े, जोर ते लीड़कन
जोर ते लीड़कन, जोर ते लीड़कन

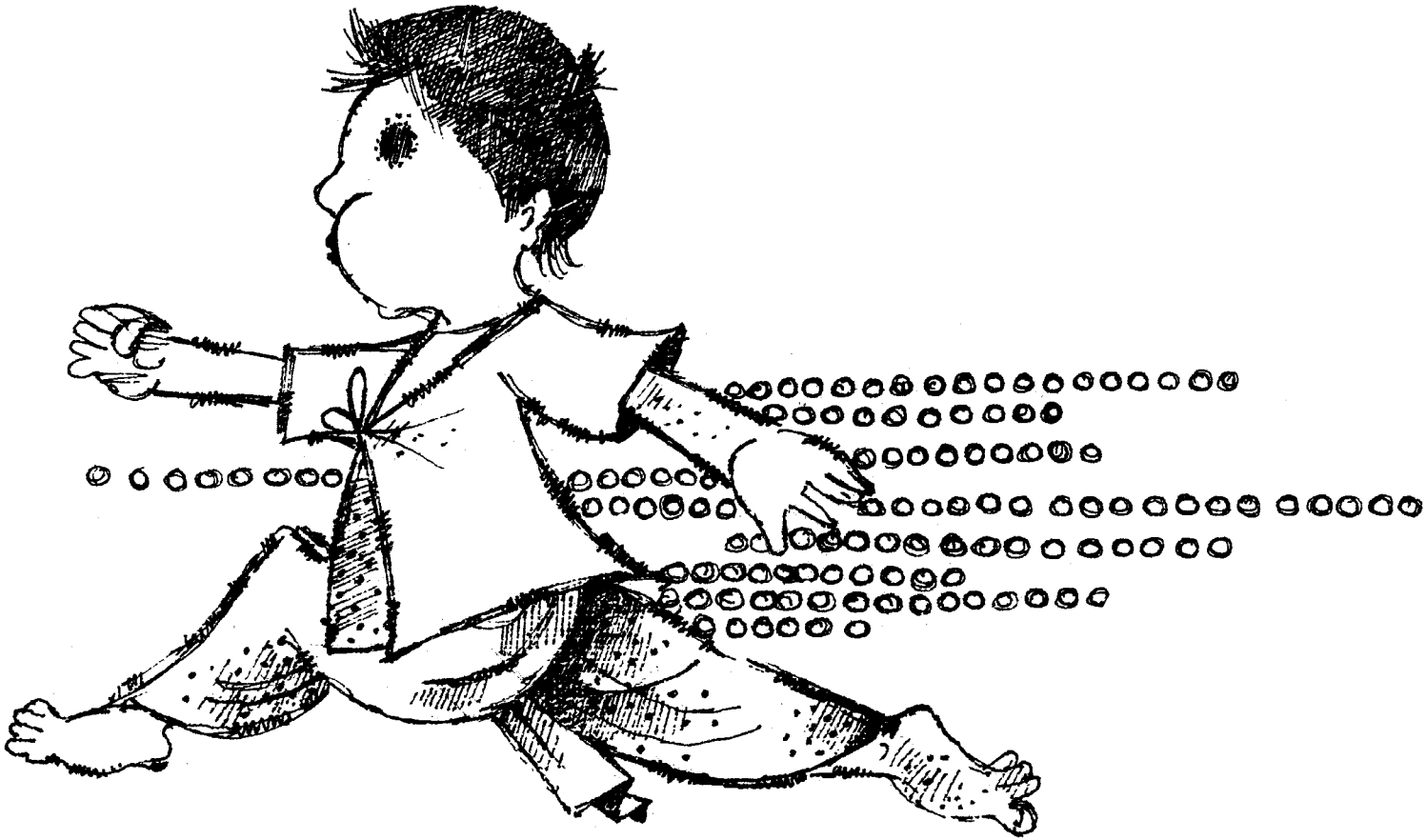

टेकढ़ान पंडय ते दिय चिल्लावन,
इंग ऊँचा आसन पवाव ये
सबकु ते ऊँचा आसन पवाव ये |

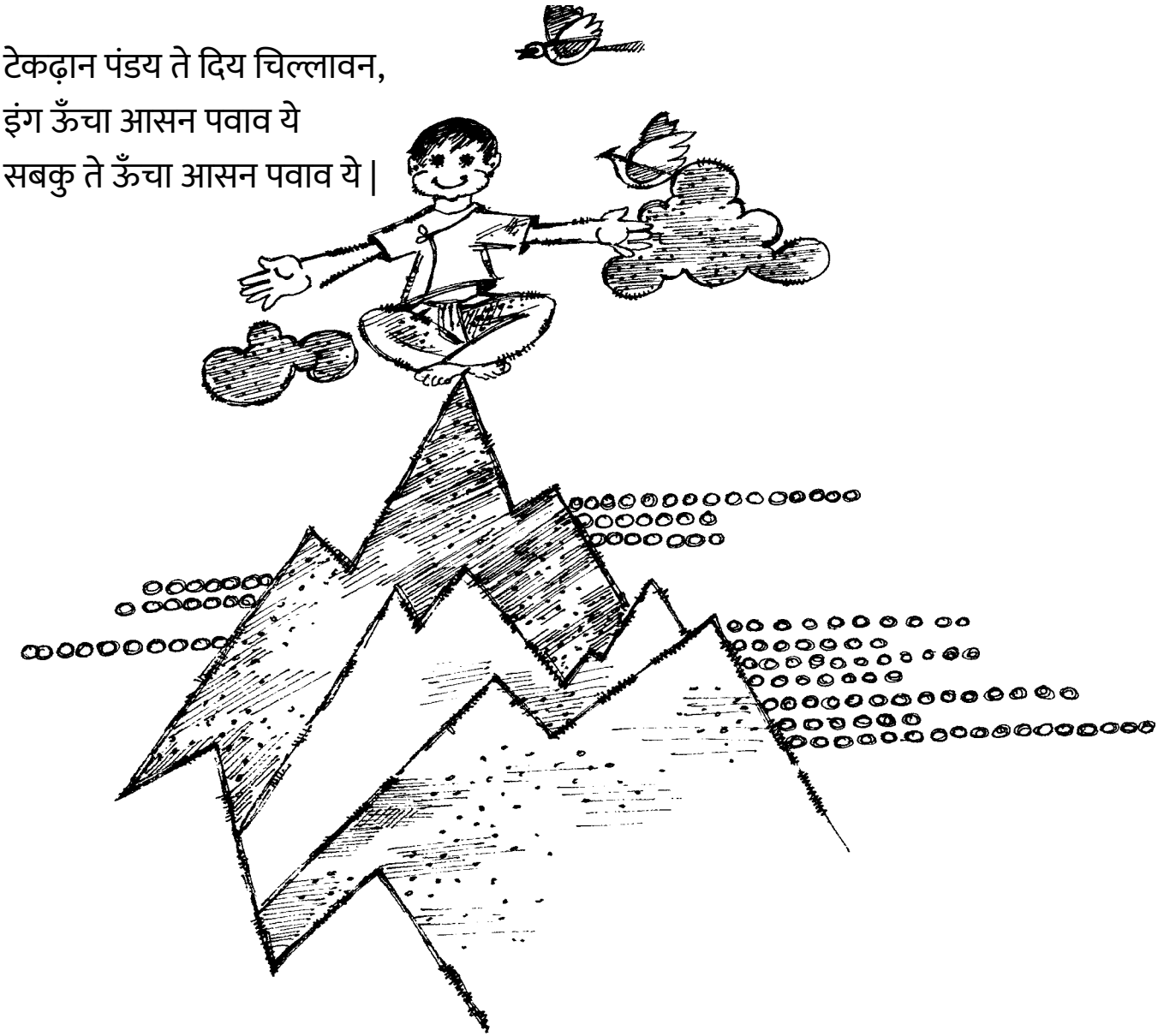

टाड़ई चाँदोन पंडय ते हनवन,
सबकु ते ऊँचा इंया गा डोली,
बदरा घय इंया डोली |

टाड़ई मन का मन हनवन,
इंजा ते ऊँचा चोय होय?

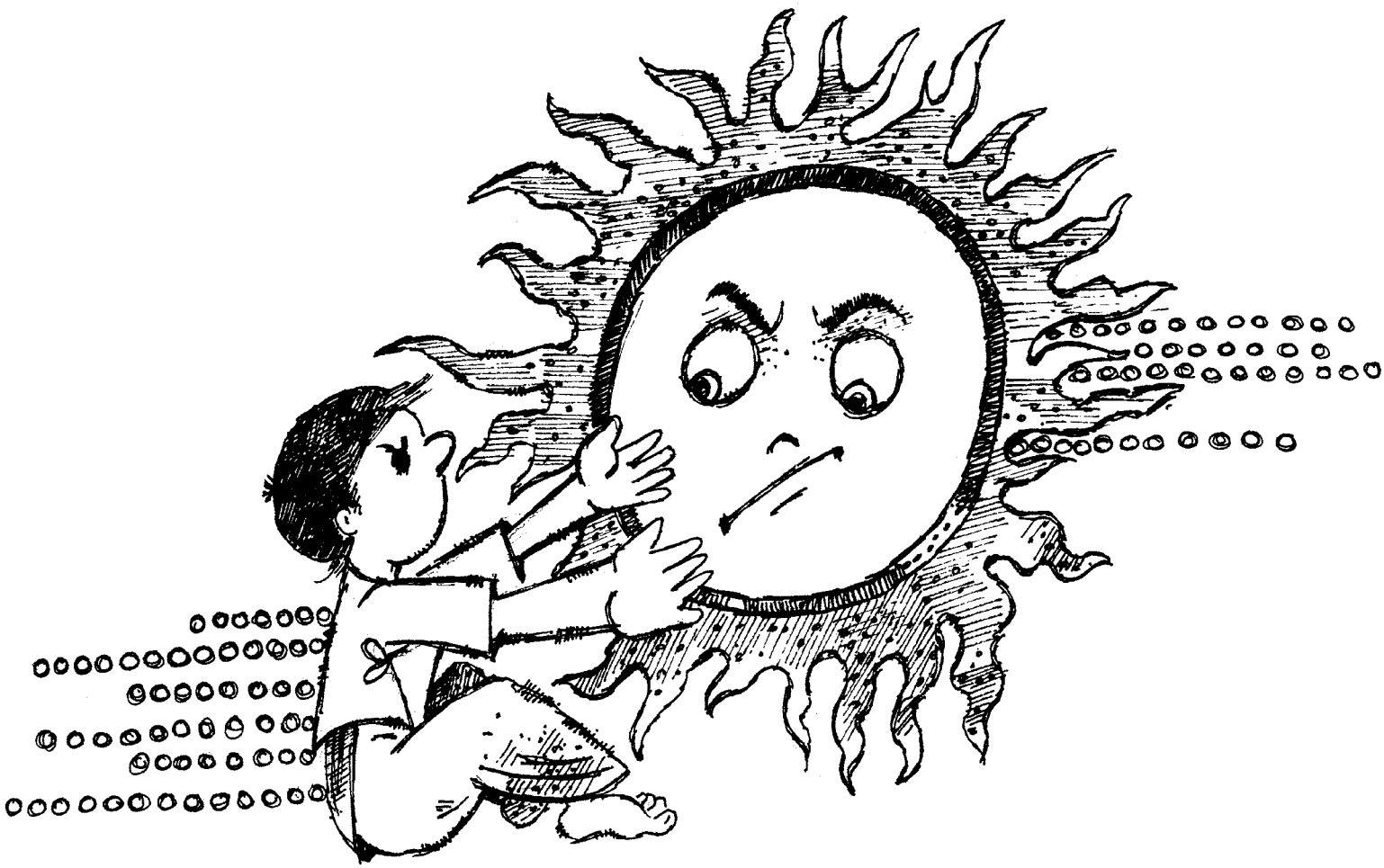

टाइ़ई दिन तक सड़ूबकन
गरम लगावयन, चिल्लाव ते हनवन
जुलयन.....आ आ |

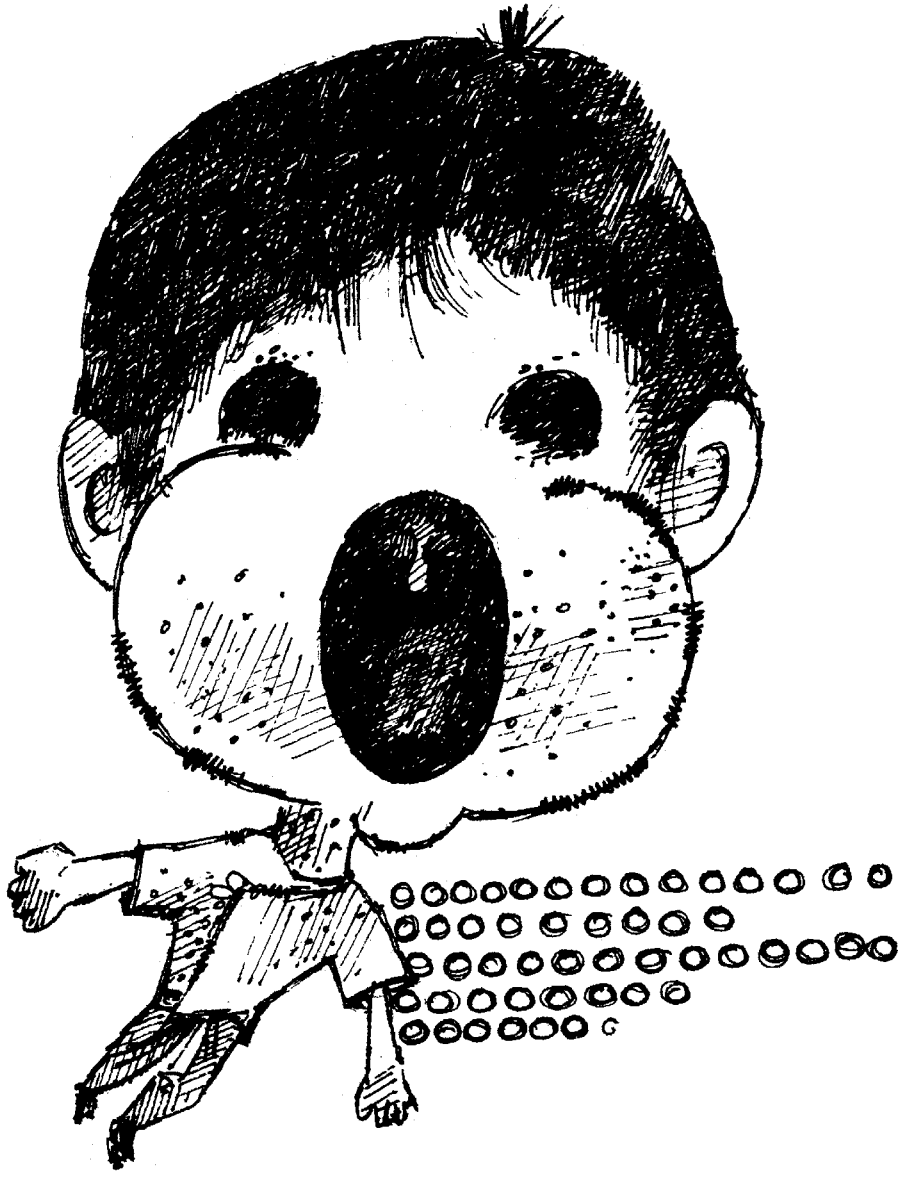

बंग हरुव अमा ते ऊँचा,
टाड़ई इनाका अम इतान हायु
टाड़ई इनाका अम इतान हायु |

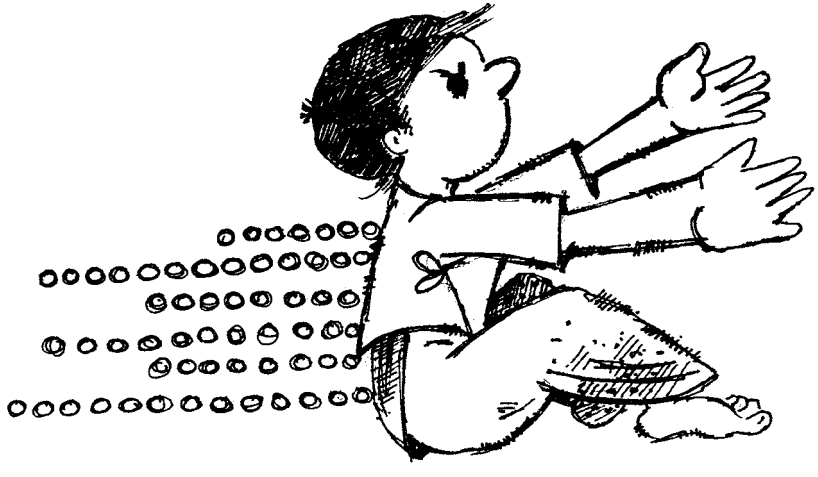

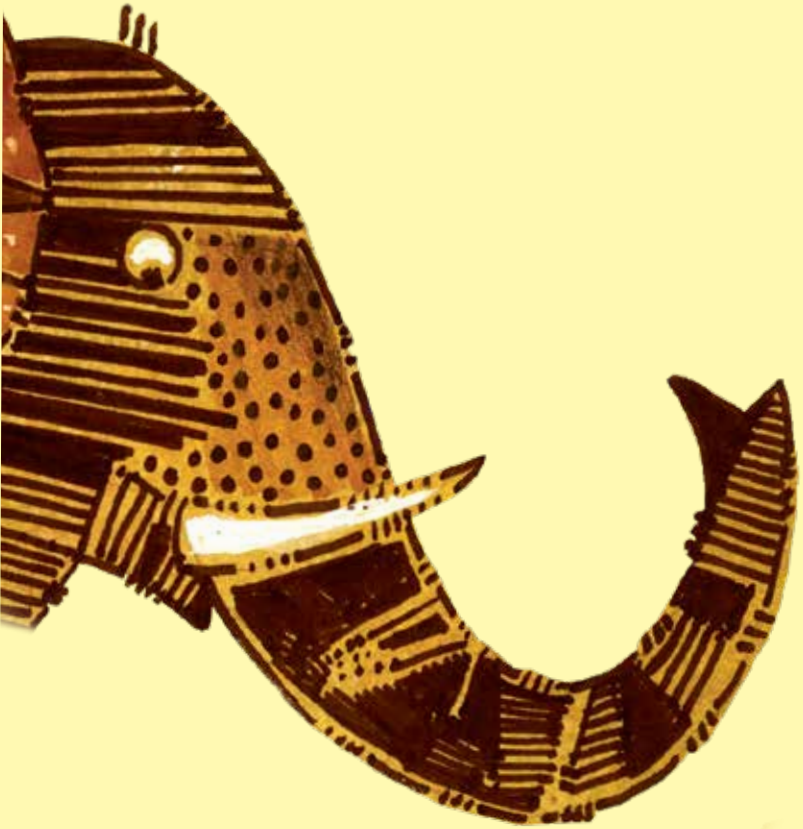

एकलव्य

मध्य प्रदेश में बैतूल क्षेत्र में बोली जाने
वाली कोरकू भाषा पर आधारित

मूल्य: ₹ 20.00

9 788119 771875

ORACLE